पाठ - 32

विनायक दामोदर सावरकर

भारत की स्वतंत्रता के आन्दोलन मंे ऐसे अनेक महापुरुषांे का योगदान रहा है जिन्होंने मातृभूमि को स्वतंत्र कराने हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। ऐसे ही एक महान पुरुष विनायक दामोदर सावरकर भी थे जो भारत की स्वतंत्रता के लिए जन्मे, जीवित रहे और जीवन के अन्तिम क्षणों तक देश की अखण्डता और स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते रहे।

सावरकर का जन्म महाराष्ट्र के भागुर गाँव में 28 मई, 1883 में हुआ था। देश भक्ति इन्हें विरासत में मिली थी। इनके बाबा विनायक दीक्षित तथा पिता दामोदर,दोनों ही महान देश-भक्त थे।

छात्र जीवन से ही वे देश की स्वतंत्रता के लिए कार्य किया करते थे। तत्कालीन स्वतंत्रता आन्दोलन के विशिष्ट कार्यकर्ताओं से उनका परिचय था। लोकमान्य तिलक से वे अत्यधिक प्रभावित थे। तिलक का ही आशीर्वाद पाकर सावरकर ने सन् 1905 में विदेशी

वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया तथा अपने साथियों के साथ मिलकर पूना शहर में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई।

विदेशी वस्त्रों की सार्वजनिक रूप से होली जलाये जाने की इस साहसपूर्ण घटना की न केवल पूना, अपितु पूरे देश मंे जोरदार चर्चा हुई। समाचार पत्रों मंे इस घटना से सम्बन्धित समाचार प्रकाशित हुआ। इससे अंग्रेज अत्यंत चिन्तित हो उठे। फलतः कॉलेज के अधिकारियों पर सावरकर को कॉलेज से निष्कासित करने के लिए दबाव डाला गया। सावरकर की बी0ए0 की परीक्षा निकट थी, फिर भी उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया और भारी जुर्माना भी किया गया। किसी प्रकार मुम्बई विश्वविद्यालय ने उन्हें परीक्षा देने की अनुमति दे दी। सावरकर बी0ए0 की परीक्षा मंे अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए। कालेज में पढ़ते हुए सावरकर ने ''मित्र मेला'' नामक संस्था की स्थापना की थी, जिसका एकमात्र उद्देश्य भारत के नवयुवकों में स्वाधीनता के प्रति चेतना उत्पन्न करना तथा उनके मन में अंग्रेजी शासन के प्रति विरोध प्रकट करने की शक्ति उत्पन्न करना था।

बाल्यावस्था से ही सावरकर अपने माता-पिता से शिवाजी और महाराणा प्रताप की वीरता और देश प्रेम की कहानियाँ सुना करते थे। छात्र जीवन से ही वे इटली के महान क्रान्तिकारी मेजिनी और गैरीवाल्डी बनने का स्वप्न देखने लगे। सावरकर ने ''अभिनव भारत'' नामक संस्था की स्थापना की जिसका एकमात्र उद्देश्य विद्रोह के द्वारा अंग्रेजी शासन को समूल नष्ट कर भारत भूमि को स्वतंत्र कराना था। सन् 1905 के बंग भंग और वायसराय लार्ड कर्जन की ''फूट डालो और शासन करो'' की नीति से भारतवासी क्षुब्ध हो उठे। अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने के लिए लोग सावरकर जैसे नेताओं की छत्रछाया में आने लगे। फलस्वरूप अंग्रेजी शासन की कोप दृष्टि सावरकर पर पड़ी। इसी बीच लोकमान्य तिलक की सलाह पर वे कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैण्ड चले गए।

भारतभूमि से इतनी दूर पहुँचकर भी सावरकर के मन मंे मातृभूमि की स्वतंत्रता की चिन्ता कम नहीं हुई। लन्दन में वह इण्डिया हाउस में रहने लगे। यह स्थान भारतीय क्रान्तिकारियों का मुख्य केन्द्र था। सावरकर श्री श्यामकृष्ण वर्मा के सहयोगी बन गए। कालान्तर में इण्डिया हाउस के समस्त कार्यों का भार उन्हीं पर आ गया। यही वह स्थान है, जहाँ बैठकर सावरकर ने तीन पुस्तकें - ''मैजिनी'', ''सिखों का इतिहास'' और ''1857 का स्वातन्त्र्य समर'' की रचना की। सरकार द्वारा इस पुस्तक के भारत प्रवेश पर यद्यपि प्रतिबन्ध लगा दिया गया था लेकिन फिर भी इसकी बहुत प्रतियाँ किसी प्रकार भारत पहुँच गईं। इस पुस्तक तथा अपने कार्यों के कारण सावरकर लोकप्रिय हो गए जिससे अंग्रेजी

सरकार उनसे बहुत नाराज हो गईं परिणाम यह हुआ कि बैरिस्ट्री की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् भी सावरकर को प्रमाण-पत्र नहीं दिया गया।

सन् 1905 से 1910 के बीच मध्य भारत में सरकार के विरुद्ध जो विद्रोह हुआ था उसके लिए सावरकर को प्रमुख रूप से उत्तरदायी ठहराया गया। फलस्वरूप उन्हें इंग्लैण्ड में मुम्बई उच्च न्यायालय के वारन्ट पर गिरफ्तार कर भारत लाया गया। पानी के जहाज से आते समय सावरकर ने फ्रान्स के मार्सलीज बन्दरगाह के पास शौचालय के रोशनदान से समुद्र के अथाह जल में कूदकर भागने का साहसिक प्रयास किया। इस घटना के बाद से वे वीर सावरकर कहलाये। वे फ्रान्स की धरती पर पहुँच भी गए लेकिन पुनः बन्दी बना लिये गए। मुम्बई के उच्च न्यायालय द्वारा उन्हें 55 वर्ष के काले पानी की कठोर सजा दी गईं सावरकर ने अण्डमान के यातना कारागार में 11 वर्षों तक कठोर सजा भोगी। इन्हें कारावास की अवधि में कोल्हू में बैल की जगह जोता जाता था और चक्की पीसनी पड़ती थी परंतु बाद में छोड़ दिये गए।

सन् 1927 में दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान से दुःखी होकर सावरकर शुद्धि आन्दोलन और समाज के संगठन के कार्यों में लग गए। वे भारत भूमि पर निवास करने वाले सभी नागरिकों को एक मानते थे तथा अलगाववादी भावना के प्रबल विरोधी थे।

सन् 1937 ई0 मंे सावरकर पूर्णरूप से मुक्त किए गए तो जनता तथा समस्त देशप्रेमियों ने मुम्बई में उनका हृदय से स्वागत किया। उन्होंने बड़ी निर्भीकता के साथ समाज में व्याप्त जाति-पाँति, छुआ-छूत और ऊँच-नीच की भावनाओं का विरोध किया। वे 1937 से 1947 तक हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रहे। सन् 1944 में भारत की अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिए दिल्ली में एक सम्मेलन हुआ। उस समय अंग्रेज सरकार साम्प्रदायिक आधार पर भारत का विभाजन करना चाहती थी। वीर सावरकर ने इसका कठोर शब्दों में विरोध किया तथा तत्कालीन वायसराय को पत्र लिखा।

वीर सावरकर देश प्रेम, त्याग, साहस और शौर्य के साक्षात प्रतीक थे। दिनांक 26 जनवरी 1966 को इस महान् देशभक्त का 83 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया और इसी के साथ भारत माता ने अपना एक कत्र्तव्यनिष्ठ और सच्चा सपूत खो दिया।

अभ्यास

1. सावरकर का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2. उन्हें कॉलेज से क्यों निकाला गया ?

3. सावरकर द्वारा स्थापित मित्र मेला नामक संस्था के क्या उद्देश्य थे ?

4. पानी के जहाज से वे कैसे भागे ?

5. सावरकर को जेल में क्या-क्या यातनाएँ भोगनी पड़ीं ?